5th class Hindi Bodh Ch. 4 (Vyakhya)

1)यह कदम्ब का पेड़------कदम्ब की डाली।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी बोध की कविता यह कदंब का पेड़ से ली गई है। इस कविता की रचयिता श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान हैं ।इस कविता में माँ का संतान के प्रति वात्सल्य भाव तथा माँ-बेटे का एक-दूसरे के प्रति स्नेह व्यक्त किया है ।

व्याख्या- इन पंक्तियों में कवयित्री कहती है कि माँ अगर यह कदंब का पेड़ यमुना नदी के किनारे पर होता,तो मैं भी पेड़ पर बैठ कर धीरे-धीरे कृष्ण बनता।यदि माँ तुम मुझे दो पैसे वाली बाँसुरी ले देती तो यह कदंब की डाली किसी तरह नीचे हो जाती।

2) तुम आँचल फैलाकर---------नीचे छिप जाता।

व्याख्या- इन पंक्तियों में कवयित्री कहती हैं कि माँ तुम पेड़ के नीचे आँखे बंद कर,अपना आँचल फैलाकर बैठती और ईश्वर से प्रार्थना करती। तब तुम्हें ध्यान में लगी देखकर मैं धीरे-धीरे पेड़ से नीचे आकर तुम्हारे फैले हुए आँचल में आकर छिप जाता।